

कला, संस्कृति एवं युवा विभाग

(संग्रहालय निदेशालय)

चन्द्रधारी संग्रहालय, दरभंगा
की
पाषाण प्रतिमाएँ



डॉ. शिव कुमार मिश्र



चन्द्रधारी संग्रहालय, दरभंगा

चन्द्रधारी संग्रहालय, दरभंगा की स्थापना अप्रैल, 1957 ई. में स्व. चन्द्रधारी सिंह, राँटी ड्योढ़ी, मधुबनी द्वारा प्रदत्त कलाकृतियों के साथ राँटी ड्योढ़ी, मधुबनी में हुई थी। 7 दिसंबर, 1957 ई. को दरभंगा के मानसरोवर झील के किनारे दिग्घी हाउस में इसका शुभारंभ हुआ। पूर्व में यह मिथिला संग्रहालय के नाम से जाना जाता था और चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय, दरभंगा के प्रांगण में ही संचालित था। दरभंगा में इसका नामकरण मुख्य दाता के नाम पर चन्द्रधारी संग्रहालय हुआ। बाबू साहब (मुख्यदाता) के अथक प्रयास का प्रतिफल ही वर्तमान संग्रहालय है। पूर्व संग्रहालयाध्यक्ष प्रोफेसर (डॉ.) कृष्णकांत मिश्र के द्वारा इस संग्रहालय को और समृद्ध किया गया था। संग्रहालय की सामग्रियों में पाषाण प्रतिमाएँ, चित्रकारी, हाथीदाँत से निर्मित कला वस्तुएँ, कांस्य प्रतिमाएँ, पांडुलिपियाँ, वस्त्र, मुद्राएँ आदि प्रमुख हैं।

चन्द्रधारी संग्रहालय में पन्द्रह दीर्घाओं में अलग-अलग बहुमूल्य पुरावशेषों एवं कलाकृतियों को वैज्ञानिक ढंग से सुसज्जित कर प्रदर्शित किया गया है। यहाँ पौराणिक कथाओं, उद्धरणों एवं प्राचीन ग्रंथों के श्लोकों का अध्ययन एवं विश्लेषण कर प्राचीन विद्वानों के सहयोग से कलाकार द्वारा चित्रकारी प्रस्तुत की गयी है। चित्रकारी मूल रूप से पौराणिक ग्रंथों एवं कल्पना पर ही आधारित हैं, यथा- महाभारत की घटनाओं के चित्रण, रामायण के दृश्यों का चित्रण आदि। प्राचीन हस्तलिपियों का यहाँ अकूत भंडार है जिसमें मिथिलाक्षर एवं कैथी लिपि के दस्तावेज हैं।

मूर्तिकक्ष काफी सुन्दर एवं दृश्यस्पर्शी है। 200 के करीब पुरावशेष हैं। अधिकतर मूर्तियाँ कर्णाटकालीन हैं जो काले पत्थर की बनी हैं तथा मिथिला क्षेत्र से संगृहीत है। मूर्ति विशेषज्ञ डॉ. जलज कुमार तिवारी बताते हैं कि **महाश्री तारा, हरिहरार्क** एवं **अमृतप्रभ लोकेश्वर** की मूर्ति अत्यंत ही दुर्लभ है। कुछ संगमरमर पत्थर निर्मित मूर्तियाँ भी सुन्दर एवं मनमोहक है। राजनगर से प्राप्त 18 वीं सदी की बनी लाल पत्थर की भगवान विष्णु की मूर्ति भी अपने आप में अनोखी है। इसके अलावा बुद्ध, तारा, गणेश, उमा-महेश्वर, सूर्य, वराह आदि की अनेक मूर्तियाँ हैं जो दर्शनीय है। कांस्य कक्ष में भी विभिन्न प्रकार की मूर्तियाँ प्रदर्शित है। अधिकतर मूर्तियाँ दरभंगा राज के राजनगर से प्राप्त हैं।

इस कक्ष में नेपाली, तिब्बती एवं भारतीय कला का संगम देखने को मिलता है। इसमें तारा, बुद्ध, सूर्य, अवलोकितेश्वर, नृसिंह आदि मूर्तियाँ प्रमुख हैं।

हाथी दाँत से निर्मित कलात्मक वस्तुएँ भी प्रदर्शित हैं। कुछ काष्ठ निर्मित सुन्दर बक्से हैं, जिन पर बड़े ही कलात्मक ढंग से हाथी दाँत से अलंकरण बनाया गया है।

प्रसिद्ध समाजशास्त्री प्रोफेसर हेतुकर झा (पटना विश्वविद्यालय) ने मिथिला की प्राचीन आभूषण तथा मुगलकालीन वस्त्र आदि अपने पिता पंडित बलदेव झा की स्मृति में दान दिया था। प्राकृतिक इतिहास दीर्घा भी अत्यंत सुन्दर एवं दर्शनीय है।

संग्रहालय का पुस्तकालय काफी समृद्ध है। करीब 10,000 संदर्भ ग्रंथों का संकलन है। जिसमें तंत्रविद्या, ज्योतिष शास्त्र, दर्शन, इतिहास, कला, पुरातत्व आदि की पोथियाँ प्रमुख हैं।

चन्द्रधारी संग्रहालय के ये प्राचीन अलभ्य प्रदर्श संग्रहालय इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ता है। इस संग्रहालय के परिदर्शन हेतु पूर्व में कई ख्यातनाम महान विद्वान, राजनेता आदि समय-समय पर पधारते रहे हैं। इनमें स्व॰ इन्दिरा गाँधी, स्व॰ लाल बहादुर शास्त्री, स्व॰ जय प्रकाश नारायण, डॉ॰ जाकिर हुसैन, डॉ॰ श्रीकृष्ण सिंह आदि प्रमुख थे, जिन्होंने संग्रहालय के प्रदर्शों का अवलोकन कर स्व. बाबू चन्द्रधारी सिंहजी की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी।

इस पुस्तिका को तैयार करने में बौद्धिक सहयोग के लिए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के वरिष्ठ पदाधिकारी एवं मूर्ति विशेषज्ञ डॉ. जलज कुमार तिवारी तथा संग्रहालय, बिहार के पूर्व निदेशक डॉ. उमेश चन्द्र द्विवेदी के प्रति हार्दिक आभार। साथ ही पटना संग्रहालय के संग्रहालयाध्यक्ष डॉ. शंकर सुमन को समुचित सहयोग के लिए धन्यवाद। महाराजाधिराज लक्ष्मीश्वर सिंह संग्रहालय, दरभंगा के दीर्घा सहायक चन्द्रप्रकाश का तकनीकी सहयोग महत्वपूर्ण है। डॉ. सुशांत कुमार, मुरारी कुमार झा, ब्रजेन्द्र मिश्र एवं अनिकेत कुमार का भी सहयोग मिला है। आदित्य पब्लिकेशन के फकीर मुहम्मद, राकेश कुमार गुप्ता तथा चंदन कुमार के सहयोग के बिना प्रकाशन संभव नहीं था। सभी के प्रति धन्यवाद।

दरभंगा, 20 जून, 2022

(डॉ. शिव कुमार मिश्र)
चन्द्रधारी संग्रहालय, दरभंगा



अमृतप्रभ लोकेश्वर (Amritaprabha Lokeshvara)
11th- 12th Cent. AD.



महाश्री तारा (Mahashri Tara)
11th- 12th Cent. AD.



हरिहरार्क (Harihararka)
12th- 13th Cent. AD.



बुद्ध (Buddha)
11th - 12th Cent. AD.



सूर्य (Surya)
9th- 10th Cent. AD.



सूर्य (Surya)
12th- 13th Cent. AD.



बुद्ध (Buddha)
8th- 9th Cent. AD.



बुद्ध (Buddha)
8th- 9th Cent. AD.



विष्णु (Vishnu)
15th- 16th Cent. AD.



विष्णु (Vishnu)
12th- 13th Cent. AD.



सूर्य (Surya)
17th- 18th Cent. AD.



विष्णु (Vishnu)
14th- 15th Cent. AD.



सिंहवाहिनी दुर्गा (Simhavahini Durga)
11th - 12th Cent. AD.



नेपाल के स्थानीय देवता (Local Deity of Nepal)
15th - 16th Cent. AD.



महिषासुरमर्दिनी
(Mahishasuramardini)
12th- 13th Cent. AD.



गणेश (Ganesha)
16th- 17th Cent. AD.



वराह (Varaha)
10th - 11th Cent. AD.



बुद्ध (Buddha)
9th - 10th Cent. AD.



कल्याण सुन्दर (Kalyana Sundara)
9th - 10th Cent. AD.



द्वार – स्तंभ – यमुना (Door Jamb- Yamuna)
12th - 13th Cent. AD.



तारा (Tara)
11th - 12th Cent. AD.



गणेश (Ganesha)
8th-9th Cent. AD.



उमा – महेश्वर (Uma - Maheshvara)
17th - 18th Cent. AD.



गणेश (Ganesha)
17th- 18th Cent. AD.



विष्णु (Vishnu)
13th- 14th Cent. AD.



गणेश (Ganesha)
15th - 16th Cent. AD.



मनौती स्तूप (Votive Stupa)
10th - 11th Cent. AD.



नृत्य गणेश (Dancing Ganesha)
9th-10th Cent. AD.



विष्णु (Vishnu)
12th-13th Cent. AD.



विष्णु (Vishnu)
Modern



विष्णु (Vishnu)
13th- 14th Cent. AD.



गणेश (Ganesha)
15th-16th Cent. AD.



मातृका पट्ट (Matrika Panel)
12th-13th Cent. AD.



उमा – महेश्वर (Uma-Maheshvara)
17th-18th Cent. AD.



उमा–महेश्वर (Uma-Maheshvara)
13th - 14 th Cent. AD.



उमा–महेश्वर का भग्न भाग
(Broken Part of Uma - Maheshvara)
13th - 14 th Cent. AD.



देवता का सिर (Head of Deity)
11th- 12th Cent. AD.



बुद्ध (Buddha)
10th Cent. AD.



नवग्रह पट्ट (NAVAGRAHA PANEL)
13th- 14th Cent. AD.



गणेश (Ganesha)
17th- 18th Cent. AD.


AY/4



Published By: The Chandradhari Museum, Darbhanga, Dept. of Art Culture And Youth (Directorate of Museum), Govt. of Bihar, 2022

Printed by: Aditya Publication #9576099416